INRI

LIVRARIA
DE
J. G. MAZZIOTTI
SALEMA GARÇÃO

II.
12

nae. Quia inclinavit aurem
suam michi: et in diebus meis in-
Circumdederunt me vocabo.
me dolores mortis: et pericu-
la inferni invenerunt me.
Tribulationem et dolorem in-
veni: et nomen domini invoca-
vi. O domine libera animam meam: mi-
sericors dominus et ius-
tus et deus noster miseretur.
Custodiens parvulos dominus:
humiliatus sum et liberavit me.
Convertere anima mea
in requiem tuam: quia dominus benefe-
cit tibi.
Quia eripuit animam meam de mor-
te: oculos meos a lacri-
mis: pedes meos a lapsu.

D Placebo domino
Dilexi quoniam
exaudiet domi
nus vocem oronis

KL Jenuier

| | | | |
|---|---|---|---|
| iii | a | | Le iour de lan |
| | b | iiii N | Oct s estiene. |
| xi | c | iii N | Oct s iohan |
| | d | ii N | Oct des innocens |
| xix | e | N | |
| viii | f | N | |
| | g | viii Id | La typhanie |
| xvi | a | vii Id | |
| v | b | vi Id | |
| | c | v Id | |
| xiii | d | iiii Id | |
| ii | e | iii Id | |
| | f | ii Id | |
| x | g | Id | |
| | a | [illegible] | S mor |

| | | | |
|---|---|---|---|
| xviii | b | kl | |
| vii | c | kl | |
| [illegible] | d | kl | |
| xv | e | kl | |
| iiii | f | kl | |
| | g | kl | S agnes |
| xii | A | kl | S vicent |
| i | b | kl | |
| | c | kl | |
| ix | d | kl | S pol |
| | e | kl | |
| xvii | f | kl | S iulien |
| vi | g | kl | |
| | | kl | |
| [illegible] | b | kl | |
| | c | kl | |

# KL Feurier

| | | | |
|---|---|---|---|
| xi | d | | S. seuer |
| | c | N | La chandeleur |
| xix | f | N | |
| viii | g | N | |
| | A | N | S. agathe |
| xvi | b | Id | |
| v | c | Id | |
| | d | Id | |
| xiii | e | Id | |
| ii | f | Id | |
| | g | Id | |
| x | | Id | |
| | b | Id | |
| xviii | c | Id | S. valentin |
| vii | d | Kl | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | e | kl' | S' iuliane |
| xv | f | kl' | |
| iiij | g | kl' | |
| | a | kl' | |
| xij | b | kl' | |
| i | c | kl' | |
| | d | kl' | S' pierre |
| ix | e | kl' | |
| | f | kl' | S' magnas |
| xix | g | kl' | |
| viij | a | kl' | |
| | b | kl' | |
| xvj | c | kl' | |
| v | t | | |

# KL Mars

| | | | |
|---|---|---|---|
| iij | d | Kl | S aubin |
| | e | N | |
| xi | f | N | |
| | g | Id | |
| xix | a | Id | |
| viij | b | Id | |
| | c | Id | |
| xvj | d | Id | |
| v | e | Id | |
| | f | Id | |
| xiij | g | Id | |
| ij | a | Id | |
| | b | Id | |
| x | c | Id | |
| | d | Kl | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| xviii | c | kl | |
| vii | f | kl | |
| | g | kl | |
| xv | a | kl | |
| iiii | b | kl | |
| | c | kl | S benoit |
| xii | d | kl | |
| i | e | kl | |
| | f | kl | Vigille |
| ix | g | kl | la nre dame |
| | a | kl | |
| xvii | b | kl | |
| vi | c | kl | S emoul |
| | d | kl | |
| xiiii | e | kl | |
| iii | f . | | |

KL Aprill

| | | | |
|---|---|---|---|
| | g | | S valeri |
| x | a | N' | |
| · | b | N' | |
| xiii | c | N' | |
| viii | d | N' | |
| | e | Id' | |
| xvi | f | Id' | |
| v | g | Id' | |
| · | a | Id' | |
| xiii | b | Id' | |
| ii | c | Id' | |
| | d | Id' | |
| x | e | Id' | S marcel |
| | f | Id' | |
| xviii | g | Id | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | a | Kl | |
| xv | b | Kl | |
| iiij | c | Kl | |
| | d | Kl | |
| xij | e | Kl | |
| i | f | Kl | |
| | g | Kl | |
| ix | a | Kl | S george |
| | b | Kl | |
| xvij | c | Kl | S marc |
| vi | d | Kl | |
| | e | Kl | |
| xiiij | f | Kl | |
| iii | g | Kl | S germain |
| | a | Kl | |

# KL Moy

| | | | |
|---|---|---|---|
| xi | b | | S iacq & s phe |
| | c | N' | Se anastaise |
| xix | d | N' | Se croix |
| viii | e | N' | |
| | f | Id' | |
| xvi | g | Id' | S iohan |
| v | a | Id' | |
| | b | Id' | |
| xiii | c | Id' | S nicolas |
| ii | d | Id' | |
| | e | Id' | |
| x | f | Id' | |
| | g | Id' | |
| xviii | | Id' | |
| vii | b | Id' | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | c | kl | S' lonore |
| xv | d | kl | |
| iiii | e | kl | |
| | f | kl | |
| xii | g | kl | |
| i | a | kl | Se quitaire |
| | b | kl | |
| ix | c | kl | |
| | d | kl | |
| xvii | e | kl | |
| vi | f | kl | |
| | g | kl | S' ildeuert |
| xiiii | | kl | |
| iii | b | kl | |
| | c | kl | |
| xi | d | kl | |

# KL Junius

| | | | |
|---|---|---|---|
| xix | e | | S nicomede |
| viii | f | N | |
| | g | N | |
| xvi | A | N | |
| v | b | N | S saturni |
| | c | Id | |
| xiii | d | Id | |
| ii | e | Id | S godart |
| | f | Id | |
| x | g | Id | |
| | A | Id | S bernabe. |
| xviii | b | Id | |
| vii | c | Id | |
| | d | Id | |
| xv | e | Id | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| iii | f | Kl | S cir s iulitte |
| | g | Kl | |
| xi | A | Kl | |
| i | b | Kl | S geruais |
| | c | Kl | |
| ix | d | Kl | |
| | e | Kl | S lieffroy |
| xvii | f | Kl | vig |
| vi | g | Kl | s iohan baptiste |
| | A | Kl | S eloy |
| xiiii | b | Kl | |
| iii | c | Kl | |
| | d | Kl | vig |
| xi | e | Kl | s pierre s pol |
| | f | Kl | |

# KL Juillet

| | | | |
|---|---|---|---|
| xix | g | Kl | S. tybault |
| viij | a | N | |
| | b | N | S. marcial |
| xvj | c | N | S. martin |
| v | d | Id | |
| | e | Id | |
| xiij | f | Id | |
| ij | g | Id | |
| | a | Id | |
| x | b | Id | |
| | c | Id | |
| xviij | d | Id | |
| vij | e | Id | S. benoit |
| | f | | |
| xv | g | Id | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| iiij | a | Kl | |
| | b | Kl | |
| xij | c | Kl | S alex |
| i | d | Kl | |
| | e | Kl | |
| ix | f | Kl | S victor |
| | g | Kl | La magdalene |
| xvij | a | Kl | |
| vj | b | Kl | |
| | c | Kl | S iacq̃s ap̃ostle |
| xiiij | d | Kl | s anne |
| iij | e | Kl | |
| | f | Kl | |
| xi | g | Kl | |
| | a | Kl | |
| xix | b | Kl | S germain |

KL Aoust

| | | | |
|---|---|---|---|
| viii | c | | S. pierre |
| | d | N | S. estiene |
| xvi | e | N | S. estiene |
| v | f | N | |
| | g | N | nostre dame des neges |
| xiii | A | Id | La transfiguration |
| ii | b | Id | |
| | c | Id | S. cire |
| x | d | Id | S. Romain vigilia |
| | e | Id | S. lorens |
| xviii | f | Id | |
| vii | g | Id | |
| | A | Id | |
| xv | b | Id | |
| iiii | c | Id | La nre dame |

| | | | |
|---|---|---|---|
| xii | d | Kl | |
| i | c | Kl | Oct' s lorens |
| | f | Kl | |
| ix | g | Kl | |
| | A | Kl | |
| xvii | b | Kl | |
| vi | c | Kl | |
| | d | Kl | |
| xiiii | e | Kl | S bertholomeu |
| iii | f | Kl | |
| | g | Kl | |
| xi | A | Kl | |
| | b | Kl | S vnuen |
| xix | c | Kl | S iohan |
| viii | d | Kl | S fiacre |
| | e | Kl | |
| | · | Kl | |

# KL Septembre

| | | | |
|---|---|---|---|
| xvj | f | N | |
| v | g | N | |
| | A | N | |
| xiij | b | Id | S marcel |
| ij | c | Id | |
| | d | Id | |
| x | e | Id | |
| | f | Id | La nre dame |
| xviij | g | Id | |
| vij | | Id | |
| | b | Id | |
| xv | c | Id | |
| iiij | d | Id | |
| | e | Id | Ste croix |
| xij | f | Id | S lubin |

| | | | |
|---|---|---|---|
| i | g | kl' | |
| | a | kl' | S' lambert |
| ix | b | kl' | |
| | c | kl' | |
| xvii | d | kl' | |
| vi | e | kl' | S' mathieu |
| | f | kl' | |
| xiiii | g | kl' | S' pair |
| iii | a | kl' | |
| | b | kl' | |
| xi | c | kl' | |
| | d | kl' | |
| xix | e | kl' | |
| viii | f | kl' | S' michiel |
| | g | kl' | S' geronne |

# Kl Octobre

| | | | |
|---|---|---|---|
| xvi | | | |
| v | b | N | S' leger |
| xiii | c | N | |
| ii | d | N | |
| | e | Id | |
| x | f | Id | Ste foy |
| | g | Id | |
| xviii | a | Id | |
| vii | b | Id | S' denis |
| | c | Id | |
| xv | d | Id | |
| iiii | e | Id | |
| | f | Id | |
| xii | g | Id | |
| i | | Kl | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | b | Kl | S' michiel |
| ix | c | Kl | |
| | d | Kl | S' lucas |
| xvii | e | Kl | |
| vi | f | Kl | |
| | g | Kl | |
| xiiii | a | Kl | S mellon |
| iii | b | Kl | S romaing |
| | c | Kl | |
| xi | d | Kl | |
| | e | Kl | |
| xix | f | Kl | Vig |
| viii | g | Kl | S' symon & iude |
| | a | Kl | |
| xvi | b | Kl | |
| v | c | Kl | S quentin |

# KL Novembre

| | | | |
|---|---|---|---|
| | d | N | La touz sains |
| xij | e | N | Les mors. |
| ij | f | N | |
| | g | Id' | |
| x | a | Id' | |
| | b | Id' | |
| xviij | c | Id' | |
| vij | d | Id' | |
| | e | Id' | |
| xv | f | Id' | S. martin. |
| ij | g | Id' | S. martin |
| | a | Id' | |
| x | b | Id' | |
| | c | Id' | |
| xviij | d | Id' | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| ix | e | kl' | S' aguien. |
| | f | kl' | |
| xvij | g | kl' | |
| vi | a | kl' | |
| | b | kl' | |
| xiiij | c | kl' | |
| iij | d | kl' | S'e cecille |
| | e | kl' | S' clement |
| xi | f | kl' | |
| | g | kl' | S'e katherine |
| xix | | kl' | |
| viij | b | kl' | |
| | c | kl' | |
| xvi | d | kl' | Vigille |
| v | e | kl' | S' andrieu. |

KL Decembre

| | | | |
|---|---|---|---|
| | f | | S eloy |
| xiij | g | No | |
| ij | a | No | |
| | b | No | |
| x | c | No | |
| | d | Id' | S nicholas |
| xviij | e | Id' | |
| vij | f | Id' | La n̄re dame |
| | g | Id' | |
| xv | A | Id' | |
| iiij | b | Id' | S valeri |
| | c | Id' | |
| xij | d | Id' | S luce |
| i | e | Id' | |
| | f | Id' | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| xvj | g | kl | O sapiencia. |
| vj | a | kl | |
| | b | kl | |
| xiiij | c | kl | |
| iij | d | kl | |
| | e | kl | S thomas |
| xj | f | kl | |
| | g | kl | |
| xix | a | kl | vigille |
| viij | b | kl | Le io de nouel |
| | c | kl | s estiene |
| xvj | d | kl | s iohan |
| v | e | kl | Les innocens |
| | f | kl | S iohan. |
| xiij | g | kl | S iusin |
| ij | a | kl | S seuestre |

Secundum iohannem

In principio erat uer-
bum et uerbum erat
apud deū et deus erat uerbū
hoc erat in principio apud deū
om̄ia per ipm̄ facta sunt et sine
ipso factum est nichil Quod
factum est in ipso uita erat et
uita erat lux hoīm et lux in
tenebris lucet et tenebre eā nō
comprehenderunt Fuit ho-
mo missus a deo cui nomen
erat iohannes hic uenit in
testimoniū ut testimonium
perhiberet de luīe ut omnes
crederent per illum Non erat

ille lux sed testimonium per
hiberet de lumine Erat lux vera
que illuminat omnem hominem
venientem in hunc mundum
In mundo erat et mundus
per ipsum factus est et mundus
eum non cognovit In propria
venit et sui eum non recepe
runt Quotquot autem
receperunt eum dedit eis pote
statem filios dei fieri his qui
credunt in nomine eius qui
non ex sanguinibus neque ex vo
luntate carnis neque ex vo
luntate viri sed ex deo na
ti sunt et verbum caro factum

est et habitabit in nobis et vidimus gloriam eius gloriam quasi unigeniti a patre plenum gratie et veritatis Deo g
Te invocamus te lau damus te glorificamus o beata et gloriosa trinitas Sit nomen domini benedictum Ex hoc nunc et usque in seculum Oremus
Protector in te sperantium deus sine quo nichil est validum nichil sanctum multiplica super nos misericordiam tuam ut te rectore te duce sic transeamus per bona temporalia ut non amittamus eterna

P

Ecclesiam tuā q̄s dn̄e be
nignus illustra ut b̄i
iohannis apostoli tui et eu
uangeliste illūiata doctrinis
ad dona perueniat sēpiterna P

*Secundum lucam.*

Missus est angelus gabri
el a deo in ciuitatē ga
lilee cui nomen nazareth ad
uirginem desponsatā uiro
cui nomen erat ioseph de do
mo dauid et nomē uirginis
maria Et ingressus ange
lus ad eā dixit Aue gratia
plena dominus tecū benedi
cta tu in mulieribꝫ que cū au

disset turbata est in sermone eius
Et cogitabat qualis esset ista
salutacio Et ait angelus ei
Ne timeas maria invenisti
gratiam apud dominum ecce conci
pies in utero et paries filium
et vocabitur nomen eius
ihesum Hic erit magnus et filius
altissimi vocabitur Et dabit
illi dominus deus sedem dauid patris
eius Et regnabit in domo
iacob in eternum et regni eius
non erit finis Dixit autem maria
ad angelum Quomodo fiet
istud angelus dei quoniam virum
non cognosco Et respondens

angelus dixit Sps̄ sanctus
superueniet in te et uirtus
altissimi obumbrabit tibi
Ideoqz et quod nascetur ex te
sctm̄ uocabitur filius dei et ecce
elizabeth cognata tua et ipsa
concepit filium ī senectute
sua et hic mensis est sextus
illi que uocatur sterilis quia
nō erit impossibile apud deū
omne uerbū Dixit autē maria
ecce ancilla dn̄i fiat michi
scdm̄ uerbum tuum. D.g.

Domine labia mea
aperies Et os me
um annunciabit

laudem tuam

Deus in adiutorium
meum intende

Dñe ad adiuuandũ
me festina.

Gloria patri et filio et
spiritui sancto

Sicut erat in principio
et nunc et semp̄ et in scl̄a
seculoꝝ amen Alleluya

Ave maria grã plena dñs
tecum Ave maria

Venite exultemus
dño iubilemus deo
salutari nostro preoccupe
mus faciem eius in confessio

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

ne et in psalmis iubilem⁹
ei. Añ. Ave maria.
Quōm deus magnus dn̄s
et rex magnus super om̄s
deos quōn non repellet dn̄s
plebem suā q: in manu ei⁹
sunt om̄s fines terre et al
titudines montiū ipe con
spicit. Dominus tecum.
Quōm ipsius est mare et
ipse fecit illud et aridam
fundaverunt manus ei⁹
venite adoremus et procı
damus ante deum ploreṁ⁹
coram dn̄o qui fecit nos q:
ipse est dn̄s deus noster nos

autem populus eius et oues
paſcue eius Aue maria
Hodie ſi vocem eius audie-
ritis nolite obdurare corda
ueſtra ſicut ĩ exacerbatione
ſcdm̄ diem tentacionis in
deſerto ubi tentauerunt me
patres ueſtri probauerunt
et viderūt opa mea Dn̄s tecū
Quadraginta annis pro-
ximus fui generationi huic
et dixi ſemper hij errant
corde ipſi uero nō cognouerūt
uias meas quibꝫ iuraui ī
ira mea ſi introibunt in re-
quiem meam Aue m̄

Gloria pr̄i Dō' tcū A Quem

Quem terra ponthus
ethera colunt adorat
predicant trinam regentē
machinam claustrum ma
rie baiulat

Cui luna sol et oia deser
uiunt per tempora perfusa
celi gratia gestant puelle
uiscera

Beata mr̄ munere cui
superius artifex mundum
pugillo continens uentris
sub archa clausus est

Beata celi nuncio fecun
da sancto spū desideratus

gentibus annis per aluum
fusus est.
Maria mr̄ gratie mater
mīe tu nos ab hoste protege.
et hora mortis suscipe.
Gloria tibi domine qui
natus es de virgine cum pre
scō spiritu in sempiterna
secula. Amen. A. Benedicta tu
Domine dominus nr̄
q̄ admirabile est
nomen tuum in universa
terra.
Qm elevata est magni
ficencia tua super celos
Ex ore infancium et

lactencium perfecisti laudem
propter inimicos tuos ut destru
as inimicum et ultorem
Quoniam videbo celos tuos opera
digitorum tuorum lunam et stellas
que tu fundasti
Quid est homo quod me
mor es eius aut filius hominis quoniam
visitas eum
Minuisti eum paulominus
ab angelis gloria et honore
coronasti eum et constitui
sti eum super opera manu
um tuarum
Omnia subiecisti sub pedi
bus eius oves et boves uni

vniuersas in super et pecora
campi

Volucres celi et pisces ma
ris qui perambulant semi
tas maris

Dñe dñs noster q̄ ad mi
rabile est nomen tuum in
vniuersa terra. Gloria. añ
Benedicta tu in mulieribus
et benedictus fructus uentris

Celi tui eaut iuuta
enarrant gl'iam
dei et opera manuū eius an
nunciat firmamentum.

Dies diei eructat verbum
et nox nocti indicat scien

ciam

Non sunt loquelle neque
sermones quorum non audiantur
voces eorum

In omnem terram exivit
sonus eorum et in fines or-
bis terre verba eorum

In sole posuit taberna-
culum suum et ipse tanquam
sponsus procedens de thalamo
suo

Exultavit ut gigas
ad currendam viam a summo
celo egressio eius

Et occursus eius usque
ad summum eius nec est qui

se abscondat a calore eius
Lex domini immaculata con
uertens animas testimoni
um domini fidele sapientiam
prestans paruulis
Iusticie domini recte letifi
cantes corda preceptum domini
lucidum illuminans oculos
Timor domini sanctus
permanet in seculum seculi
iudicia domini uera iustifi
cata in semet ipsa
Desiderabilia super
aurum et lapidem precio
sum multum et dulciora
super mel et fauum

Etenĩ ſeruus tuus cu
ſtodit ea in cuſtodiendis illis
retribucio multa
Delicta quis intelligit
ab occultis meis munda me
dñe et ab alienis parce ſeruo
tuo
Si mei non fuerint dñati
tunc immaculatus ero et e
mundabor a delicto maximo.
Et erunt ut cõplaceant
eloquia oris mei et meditacio
cordis mei in conſpectu tuo
ſemper
Domine adiutor meus et
redemptor meus Gloria

Sicut mirra electa odorem dedi
suavitatis sca dei genitrix

Ante thorum

Domini est terra et ple
nitudo eius orbis ter
rarum et universi qui hi
tant in eo.

Quia ipse super maria fun
davit eum et sup flumina
preparavit eum.

Quis ascendet in monte
domini aut quis stabit in
loco sancto eius.

Innocens manibz et
mundo corde qui no accepit
in vano aiam suam nec

iurauit in dolo proximo suo
Hic accipiet benedictionem
a domino et misericordiam a deo sa
lutari suo.
Hec est generatio queren
tium deum querentium fa
ciem dei iacob.
Attollite portas principes
uestras et eleuamini porte
eternales et introibit rex glorie
Quis est iste rex glorie dominus
fortis et potens dominus potens
in prelio.
Attollite portas principes
uestras et eleuamini porte eter
nales et introibit rex glorie

Quis est iste rex glorie dñs
uirtutum ipse est rex glorie. A.
Ante thorum huius uirginis
frequentate nobis dulcia cantica
dragmatis. V. Aue dei genitrix uir
go semper maria. R. Intercede
pro nobis ad dominum deum nostrum
Pater noster. Et ne nos
Iube domine benedicere. Alma uir
go uirginum intercedat pro nobis
ad dominum. Lectio prima
Sancta maria uirgo
uirginum mater
et filia regis regum omni
um nobis impende sola
tium ut celestis regni perte

mereamur habere premiū
ut cum electis dei regnare
in perpetuum. Tu autem
domine miserere nostri. deo gr.
℟ Beata es virgo maria que
dominum portasti creatorem mundi
genuisti qui te fecit et in eternum
permanes virgo. ℣ Ave ma
ria gratia plena dominus
tecum. Genuisti. Iube ? Oret
voce pia pro nobis virgo m a
Sancta maria piar
rum piissima inter
cede pro nobis sancta sanctorum
sanctissima ut per te virgo
sumant nostra peccamina

qui pro nobis exire natus re
gnat super ethera ut sua cari
tate nostra deleantur peccamina
Tu autem. R. Sancta et in
maculata virginitas quibus
te laudibus referam nescio quia
quem celi capere non poterant
tuo gremio contulisti. V. Bene
dicta tu in mulieribus et bene
dictus fructus ventris tui. Quia
quem. Iube. Sancta dei genitrix
sit nobis auxiliatrix. V. [illegible]
Sancta dei genitrix
que digne meru
isti concipere quem totus orbis
nequivit comprehendere tuo

pro interventu culpas nostras
ablue ut perhennis sedem
glorie per te redempti valeant
scandere ubi manes cum
filio tuo sine tempore. Tu autem.
℟. Felix namque es sacra virgo
maria et omni laude dignissi
ma quia ex te ortus est sol iusti
cie christus deus noster. ℣. Ora
pro populo interveni pro clero
intercede pro devoto femineo
sexu sentiant omnes tuum
levamen quicumque celebrant
tuam commemorationem.
Quia ex te. Gloria patri.
Quia ex te.

Te deum laudamus te
dnm̄ confitemur
Te eternū patrem omnis
terra ueneratur.
Tibi oms̄ angeli tibi celi
et uniuerse potestates
Tibi cherubin et seraphī
incessabili uoce proclamant
Sanctus Sc̄s Sāctus
dn̄s deus sabaoth
Pleni sunt celi et terra
maiestatis glorie tue
Te gloriosus apostolo
rum chorus
Te prophetarū laudabilis
numerus

Te martirum candi
tatus laudat exercitus
Te per orbem terrarum
sancta confitetur ecclesia
Patrem in mense ma
iestatis.
Venerandū tuū verū
et unicum filium.
Sanctū quoqꝫ para
clitum spiritum.
Tu rex glorie xpiste
Tu patris sempiter
nus es filius.
Tu ad liberandū suscep
turus hoīem nō horruisti
virginis uterum.

Tu deuicto mortis aculeo
aperuisti credentibus regna
celorum.
Tu ad dexteram dei sedes
in gloria patris.
Iudex crederis esse uenturus
Te ergo quesumus famulis tuis
subueni quos precioso san
guine redemisti.
Eterna fac cum sanctis
tuis in gloria numerari.
Saluum fac populum tuum
domine et benedic hereditati tue
Et rege eos et extolle
illos usque in eternum.
Per singulos dies bene

dicimus te
Et laudamus nomen
tuum in ſclm̄ et ī ſclm̄ ſcli
Dignare dn̄e die iſto ſine
peccato nos cuſtodire.
Miſerere nr̄i domine mi
ſerere noſtri
Fiat mīa tua dn̄e ſup
nos q̄admodū ſperauimus
in te
In te dn̄e ſperaui nō confū
dar ieternū. ℣ Poſt partū virgo
iuiolata p̄manſiſti. Dei genitrix
Intercede pro nobis
Deus in adiutoriū
Dn̄e ad adiuuā

dium. Gloria. Assumpta est

Dominus regnauit decorem indutus est indutus dñs fortitudinē et p̄cinxit se.

Etenī firmauit orbē terre qui nō cōmouebitur

Parata sedes tua deus extunc a seculo tu es.

Eleuauerunt flumina dñe eleuauerunt flumina vocem suam.

Eleuauerunt flumina fluctus suos a vocib; aq̄r multarum.

Mirabiles elationes ma

ris mirabilis in altis dominus
Testimonia tua credi
bilia facta sunt nimis domum
tuam decet sanctitudo domine
in longitudinem dierum
Iubilate deo omnis terra
seruite domino in leticia
Introite in conspectu
eius in exultacione.
Scitote quoniam dominus ipse est
deus ipse fecit nos et non ipsi nos
Populus eius et oues
pascue eius introite portas
eius in confessione atria eius
in hymnis confitemini illi
Laudate nomen eius quoniam

ſuauis es dn̄s in eternū mīa
eius et uſq; in generatione
⁊ generationem ueritas eius

Deus deus meus ad te
de luce uigilo :

Sitiuit inte aīa mea
q̄ multipliciter tibi caro mea

In terra deserta in uia et
inaquosa sic in sancto appa
rui tibi ut uiderē uirtutem
tuā et gloriam tuam

Qm̄ melior est mīa tua
sup uitas labia mea lauda
bunt te

Si benedicā te in uita mea
et ī noīe leuabo manus meas

Sicut adipe et pingue
dine repleatur anima mea
a labijs exultacionis lauda
bit os meum
Si memor fui tui super
stratum meum in matutinis
meditabor in te quia fuisti ad
iutor meus
Et in velamento alarum
tuarum exultabo adhesit anima
mea post te me suscepit dex
tera tua
Ipsi vero in vanum quesie
runt animam meam introibunt
in inferiora terre tradentur in
manus gladij partes vulpium erunt

Rex uero letabitur
in deo laudabuntur omnes
qui iurant in eo quia obstru
ctum est os loquentium iniqua.
Deus misereatur nostri
et benedicat nobis
illuminet uultum suum super
nos et misereatur nostri.
Ut cognoscamus in
terra uiam tuam in omnibus
gentibus salutare tuum
Confiteantur tibi populi
deus confiteantur tibi populi omnes
Letentur et exultent gentes
quoniam iudicas populos in equitate
et gentes in terra dirigis

Confiteantur tibi ppli
deus confiteantur tibi ppli
oms terra dedit fructū suū
Benedicat nos deus deus
noster benedicat nos deus et
metuant eū oms fines terre
Benedicite oīa opera
dni dno laudate et su
exaltate eum in secula
Benedicite angeli dni do
benedicite celi domino.
Bened aq̃ oēs que sr celos
sunt dno benedicite omnes
virtutes domini domino
Bened sol et luna dno
bened stelle celi domino.

Benedicite ymber et ros dn̄o
bn̄d' oĩs sp̃s dei domino
Benedicite ignis ⁊ estus dn̄o
bn̄d' frigus et estas domino
Benedicite rores et prui
na dño bened' gelu ⁊ frigus dño
Bened' glacies et nives dño
bn̄d' noctes et dies dño
Bened' lux et tenebre dño
bn̄d' fulgura et nubes domino
Benedicat terra dño lau
det et super exaltet eũ ĩ sclã
Benedicite montes et
colles dn̄o bn̄dicite universa
germinancia in terra dño
Bened' fontes dño bn̄d'

maria et flumina domino.

Benedicite cete et omnia que moventur in aquis domino benedicite omnes volucres celi domino.

Benedicite omnes bestie et pecora domino benedicite filii hominum domino.

Benedicat israel dominum laudet et superexaltet eum in secula.

Benedicite sacerdotes domini domino benedicite servi domini domino.

Benedicite spiritus et anime iustorum domino benedicite sancti et humiles corde domino.

Benedicite anania et azaria misael domino laudate et superexaltate eum in secula.

Benedicamus patrem
et filium cum sancto spiritu
laudemus et super exalte
mus eum in secula.
Benedictus es domine
in firmamento celi lauda
bilis gloriosus et super ex
altatus eum in secula.
Laudate dominum de ce
lis laudate eum
in excelsis.
Laudate eum omnes ange
li eius laudate eum omnes
virtutes eius.
Laudate eum sol et luna
laudate eum stelle et lumen

Laudate eum celi celorum et aque
que super celos sunt laudent
nomen domini.
Quia ipse dixit et facta
sunt ipse mandauit et crea
ta sunt.
Statuit ea in eternum
et in seculum seculi preceptum
posuit et non preteribit.
Laudate dominum de terra
dracones et omnes abyssi.
Ignis grando nix gla
cies spiritus procellarum
que faciunt uerbum eius.
Montes et omnes colles li
gna fructifera et omnes cedri

Bestie et vniuersa pecora
serpentes et omnes volucres
pennate
Reges terre et omnes populi
principes et omnes iudices
terre
Iuuenes et virgines
senes cum iunioribus laudent
nomen domini quia exaltatum
est nomen eius solius.
Confessio eius super
celum et terram et exaltauit
cornu populi sui
Hymnus omnibus sanctis eius
filijs israel populo appro
pinquanti sibi

Cantate dño canticum
nouum laus eius in
ecclesia sanctorum
Letetur israel in eo qui
fecit eum et filie syon exultet
in rege suo
Laudent nomen eius in
choro in tympano et psalterio
psallant ei
Quia beneplacitum est dño
in populo suo et exaltauit man-
suetos in salutem
Exultabunt sancti in gloria
letabuntur in cubilibus suis
Exultaciones dei in gut-
ture eorum et gladij anci

pites in manib; eorum
Ad faciendam vindictã
in nationib; increpationes
in populis
Ad alligandos reges
eor in compedib; et nobiles
eorũ in manicis ferreis
Ut faciant in eis iudici
um cum scriptum gloria
hec est oĩb; sanctis eius
Laudate dnm̃ in
sanctis eius laud'
eũ ĩ firmamento virtutis eius
Laudate eum ĩ virtuti
b; eius laud' eũ s'dm̃ multi
tudine magnitudinis eius.

Laudate eum in sono tube laudate eum i psalterio et cythara

Laudate eum i tympano et choro laudate eum in cordis et organo

Laud' eum in cymbalis benesonantibꝫ laud' eu in cymbalis iubilationis ois sp̄us laudet dn̄m. An. Assumpta ẽ maria in celū gaudent angli laudantes bn̄dicunt dn̄m

In oibꝫ requiem quesiui et in hereditate domini morabor tunc precepit et dixit michi creator

dn̄i et qui creauit me re
quieuit in tabernaculo meo.
O Deo grās
gloriosa dn̄a excelsa
supra sydera qui te creauit pro
uide lactans sacrato ubere
Quod eua tristis abstulit
tu reddis almo germine in
trent ut astra flebiles celi
fenestra facta es
Tu regis alti ianua et
porta lucis fulgida uitam
datam per uirginē gentes
redempte plaudite
Maria mater V
Glīa tˡ Elegit eam deus

et preelegit eam. V. Et habitare eam
facit in tabernaculo suo. Aña. Gloriosa

Benedictus dominus deus
israel quia visitavit et
fecit redemptionem plebis sue
Et erexit cornu salutis
nobis in domo david pueri sui
Sicut locutus est per os
sanctorum qui a seculo sunt prophe
tarum eius
Salutem ex inimicis no
stris et de manu omnium
qui oderunt nos
Ad faciendam misericordiam
cum patribus nostris et memo
rari testamenti sui sancti

**I**usiurandum quod
iuraverunt ad abraham patrem
nostrum daturum se nobis
**U**t sine timore de manu
inimicorum nostrorum liberati ser
viamus illi
**I**n sanctitate et iusti
cia coram ipso omnibus diebus nostris
**E**t tu puer propheta altis
simi vocaberis preibis enim
ante faciem domini parare
vias eius
**A**d dandam scienciam
salutis plebi eius in remis
sionem peccatorum eorum
**P**er viscera misericordie dei nostri

ni quibus visitavit nos ori
ens ex alto
Illuminare hiis qui
in tenebris et in umbra
mortis sedent ad dirigendos
pedes nostros in viam pacis. A[ntiphona].
O gloriosa dei genitrix virgo
semper maria que dominum omni
um meruisti portare et regem
angelorum sola virgo lactare
peccatibus quesumus pia memorare et
pro nobis semper christum deprecare
ut tuis fulti patrociniis ad
celestia regna mereamur pervenire.
Concede nos famu
los tuos quesumus domine deus

perpetua mentis et corporis
salute gaudere et gloriosa
beate marie semper virginis
intercessione a presenti libe
rari tristicia et eterna per
frui leticia. Per dn̄m. De sp̄u sc̄o

Veni sancte spiritus reple tuorum corda
fidelium et tui amoris igne
is ignem accende. V. Emitte
spiritum tuum et creabuntur. R. Et
renovabis faciem terre.

Deus qui corda fidelium
sancti spiritus illustra
tione docuisti da nobis in
eodem spiritu recta sapere et de eius
semper consolatione gaudere.

P

De sainct nicholas

Amicus dei nicholaus ponti-
ficali decoratus infula se oibz
amabilem exhibuit. ℣. Ora pro
nobis beate nicholae. ℟. Ut digni
efficiamur promissionibz xpi.
Deus qui beatum nicho-
laum pontificem tuum
in numeris decorasti mira-
culis tribue nobis qs ut eius
meritis et precibz a gehenne in-
cendiis liberemur. Per. De s. ka-
therine. Virgo sancta katheri-
na grecie gemma urbe alexan-
drina costis regis erat filia
Diffusa est gratia in labiis tuis

Propter ea benedicat te deus in eternum

Deus qui dedisti legem moysi in summitate montis synay et in eodem loco per sanctos angelos tuos corpus beate katherine virginis et martiris tue mirabiliter collocasti tribue nobis quesumus ut eius meritis et precibus ad montem qui christus est valeamus pervenire Per c.

Deus in adiutori
um meū intende
Dn̄e ad adiu

uandum me festina.
Gloria patri.
Veni creator spūs
mentes tuorū uisi
ta imple superna gratia
que tu creasti pectora
Memento salutis auctor
quod nrī condam corporis
ex illibata uirgine nascēdo
formam sumpseris.
Maria mater.
Gloria tibi M̄ uirgo.
Beatus uir qui non
abiit in consilio
impiorū et in uia peccatorū
nō stetit: et in cathedra pesti

lencie non sedit.
Sed in lege dñi volũtas
eius et in lege eius medita
bitur die ac nocte.
Et erit tanq̃ lignum
quod plantatũ est secus de
cursus aquarum qd̃ fructũ suũ
dabit in tempore suo.
Et folium eius non de
fluet et oĩa quecumq; fa
ciet prosperabuntur
Non sic impii nõ sic
sed tanq̃ pulvis quem
proicit ventus a facie
terre.
Ideo non resurgunt

impij in iudicio neqȝ pec
catores in consilio iustorum
Qm̄ nouit dn̄s viam
iustorum et iter impiorū
peribit. Gl̄ia
Quare fremuerunt
gentes et populi me
ditati sunt inania.
Astiterunt reges terre
et principes conuenerunt
in vnū aduersus dn̄m et
aduersus xp̄m eius.
Dirumpamus vincula
eorum et proiciamus a no
bis iugum ipsorum.
Qui habitat in celis irri

debit eos et dn̄s sub sanna
bit eos
Tunc loquetur ad eos in
ira sua et in furore suo con
turbabit eos
Ego autē constitutus
sum rex ab eo super syon mō
tē scm̄ eius predicans pre
ceptum eius
Dominus dixit ad me fili⁹
meus es tu ego hodie genui te.
Postula a me et dabo tibi
gentes hereditatē tuam et ꝑ
cessionē tuā terminos terre
Reges eos in uirga ferrea
et tanq̄ uas figuli confrin

gues eos

Et nūc reges eos intelli
ge erudimini qui iudicatis
terram

Servite domino ī timo
re et exultate ei cum tremo
re

Apprehendite di re
sciplinam nequā irascatur
dñs et pereatis de via iusta

Cum exarserit in brevi
ira eius beati omnes qui
confidunt in eo

Verba mea auribus
percipe domine in
tellige clamorem meum

Intende voci orōnis

mee rex meus et deus m̄s
Qm̄ ad te orabo dñe ma
ne exaudies vocem meam
Mane astabo tibi et ui
debo qm̄ non deus volens
iniquitatem tu es.
Neq̃ hītabit iuxta te
malignus neq̃ permane
būt iniusti ante oculos
tuos
Odisti oīs qui opan
tur iniquitatē perdes oīs
qui loquntur mendacium
Virum sanguinum et
dolosum abhoīabitur dñs
ego autem in multitudi

ne mi̅e tue

Introibo in domū tuā
adorabo ad templum san
ctum in timore tuo.

Dn̄e deduc me ī iusti
cia tua et propter inimicos
meos dirige in conspectu
tuo viam meam

Qm̄ non est in ore eoꝝ
veritas cor eoꝝ vanum est

Sepulchrum patens est
guttur eorum linguis suis
dolose agebant iudica illos
deus

Decidant a cogitacionibꝫ
suis s̄dm multitudinem

impietatum eoꝝ expelle
eos qm̄ irritauerūt te dn̄e
Et letentur omnes qui
ſperant in te in eternū exul
tabunt et habitabit in eis.
Et gloriabuntur in te
omēs qui diligunt nomen
tuum qm̄ tu benedices iusto
Dn̄e ut ſcuto bone volū
tatis tue coronasti nos.
Laudate dnm̄ omēs
gentes laudate eū
omēs populi.
Qm̄ confirmata est sup
nos mīa eius et veritas dn̄i
manet in eternum.

Maria virgo assumpta est
ad ethereum thalamum in quo rex
regum stellato sedet solio
Felix namque es sacra virgo maria et omni laude dignissima. Quia ex te ortus est sol iusticie christus deus noster.

Certe dei genitrix est
nobis vita perdita
data que de celo suscepisti pro
lem et mundo genuisti sal
uatorem Deo gratias
Aue maria gratia plena dominus
tecum Aue maria Benedicta
tu in mulieribus et benedictus
fructus ventris tui Dominus tecum
Gloria patri. Aue maria
Sancta dei genitrix virgo semper maria
Intercede pro nobis ad dominum deum nostrum
Concede nos famulos

Deus ĩ adiutoriũ
Dñe ad adiu
uandũ. Gloria
Ueni creator. Jn adorem.
Ad dñm cũ tribularer
clamaui et exaudi
uit me.
Domine libera aĩam
meam a labiis iniquis et a lin
gua dolosa.
Quid detur tibi aut
quid apponatur tibi ad
linguam dolosam.
Sagitte pōtentis acu
te cum carbonibus deso
latoriis.

Heu michi quia incola
tus meus prolongatus est
habitaui cum habitantibus cedar
multum incola fuit anima
mea.
Cum hiis qui oderunt
pacem eram pacificus cum
loquebar illis impugnabant
me gratis
Leuaui oculos meos in
montes unde ueniet
auxilium michi
Auxilium meum a domino
qui fecit celum et terram.
Non det in commotionem
pedem tuum neque dormitet

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

qui custodit te
Ecce non dormitabit
neq; dormiet qui custodit isrl'
Dn̄s custodit te dn̄s pro
tectio tua super manū dexte
ram tuam.
Per diem sol non uret
te neq; luna per noctem
Dn̄s custodit te ab omni
malo custodiat aīam tuā
dn̄s
Dominus custodiat in
troitum tuū et exitū tuum
ex hoc nunc et usq; in sclm̄.
Letatus sum in hiis
que dicta sunt michi

in domum domini ibimus
Stantes erant pedes nostri
in atriis tuis ierusalem
Ierusalem que edificatur ut
civitas cuius participacio eius
in id ipsum
Illuc enim ascenderunt
tribus tribus domini testimoni
um israel ad confitendum
nomini domini
Quia illic sederunt sedes in
iudicio sedes super domum david
Rogate que ad pacem sunt ihe
rusalem et habundancia diligen
tibus te
Fiat pax in virtute

tua et habundancia in turribus
tuis
Propter fratres meos et
proximos meos loquebar pa
cem de te
Propter domum d*omi*ni dei
n*ost*ri quesivi bona tibi
In odore unguentorum tuorum
currimus adolescentule dilexe
runt te nimis
Ab inicio et ante secu
la creata sum et us
q*ue* ad futurum secl*m* no*n* desi
nam et in habitacione s*an*c*t*a cora*m*
ip*s*o ministravi Deo gr*aci*as
S*an*c*t*a dei genitrix virgo semper

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

maria Scã dei Intercede
pro nobis ad dnm deũ nostrũ
Virgo semper Gĺia Scã dei
Post partũ virgo inuiolata
permansisti Dei genitrix in
tercede pro nobis Concede
nos famulos
Deus in adiuto
rium meum in
Dñe ad adiuuandum
Gloria patri Sicut erat
Veni creator Benedicta es
Ad te leuaui oculos me
os qui hitas in celis
Ecce sicut oculi seruorũ
in manibz dominorũ suorũ

Sicut oculi ancille in
manibus domine sue ita
oculi nostri ad dominum deum
nostrum donec misereatur nostri
Miserere nostri domine miserere
nostri quia multum repleti sumus
despectione
Quia multum repleta est
anima nostra obprobrium habundan-
tibus et despectio superbis
Nisi quia dominus erat in
nobis dicat nunc
israel nisi quia dominus erat in
nobis
Cum exurgerent homines in
nos forte uiuos deglutissent nos

Cum iraſceretur furor eorum
in nos forſitan aqua abſor
buiſſet nos
Torrentem pertranſivit
anima noſtra forſitan per
tranſiſſet anima noſtra
aquam intollerabilem
Benedictus dominus qui non
dedit nos in captionem den
tibus eorum.
Anima noſtra ſicut paſſer
erepta eſt de laqueo venan
tium
Laqueus contritus eſt
et nos liberati ſumus
Adiutorium noſtrum in nomine

dn̄i qui fecit celum et t'ra
Qui confidunt in
dn̄o sicut mons
syon non cōmouebitur
ineternū qui h̄itat ī ier'lm̄
Montes in circuitu ei'
et dn̄s in circuitu p'pli sui
ex hoc nūc et usq; in sclm̄
Quia non relinquet
dn̄s uirgam peccatorū
sup sortem iustoꝝ ut nō
extendant iusti ad iniqui
tatem manus suas.
Bene fac dn̄e bonis
et rectis corde.
Declinantes autem

in obligationes adducet
dn̄s cum operantibus iniqui
tatem pax super israel Ant
Benedicta es a filio tuo dn̄a
q2 p te fructū vite com̄unicavim9
Et sic in syon fir
mata sum et in
civitate sanctificata similiter
requievi et in ierl'm potestas
mea Deo gr̄ R Post partū vir
go inviolata permansisti R
Post partū V Dei genitrix inter
cede pro nobis V Inviolata V
Gloria Post partū R Speciosa facta
es et suavis In delicijs tuis sc̄a
dei genitrix Concede nos

Deus in adiutoriū
dn̄e ad adiuuā
dum Gloria ā
Veni creator Pulchra.
In conuertendo dn̄s
captiuitatē ſyon facti
ſumus ſicut conſolati.
Tunc repletum eſt gau
dio os nr̄m et lingua noſtra
exultacione
Tunc dicent inter gn̄s
magnificauit dn̄s facere
cum eis
Magnificauit dn̄s facē
nobiſcum facti ſumus letātes
Conuertere domine capti

uitatē nr̄am ſicut torrens
in auſtro

Qui ſeminant ī lacri
mis in exultacione metent
Euntes ibant et flebant
mittentes ſemina ſua.
Uenientes autem ueni
ent cum exultacione por
tantes manipulos ſuos

Niſi dn̄s edificauerit
domū in uanū la
borauerunt qui edificant
eam

Niſi dn̄s cuſtodierit
ciuitatē fruſtra uigilat
qui cuſtodit eam.

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

Vanu͂ est vobis ante
lucem surgere surgite post
q̄ sederitis qui manduca
tis panem doloris
Cum dederit dilectis
suis sompnu͂ ecce hereditas
dn̄i filii merces fruct⁹ ventris
Sicut sagitte in manu
potentis ita filii excussoꝝ
Beatus vir qui imple
vit desideriu͂ suu͂ ex ipsis nō
confundetur cum loquetur
īnimicis suis in porta.
Beati om̄s q̄ timent dn̄m
qui ambulant ī viis eius
Labores manuu͂ tuaꝝ

q: manducabis beatus es
et bene tibi erit
Uxor tua sicut vitis habū
dans in lateribus domus tue.
Filij tui sicut novelle
olivarum ī circuitu mēse tue
Ecce sic benedicetur homo
qui timet dominum
Benedicat tibi dn̄s ex
syon et videas bona ierlm̄
omībz diebz vite tue
Et videas filios filiorz
tuorz pacem sup̄ israel. an̄
Pulchra es et decora filia ierlm̄
terribilis ut castrorum acies
ordinata capitulum

Et radicaui in populo
honorificato et in par
tes dei mei hereditas illius
et in plenitudine sanctorum
detencio mea. Deo gratias. ℟
Speciosa facta es et suauis ℣
Speciosa ℟ In delicijs tuis sancta
dei genitrix ℣ Et suauis Gloria
Speciosa ℣ Dignare me lauda
re te uirgo sacrata ℟ Da michi in
uirtutem contra hostes tuos.
Concede nos.
Deus in adiutorium
Domine ad adiuuan
dum Gloria Beata mr
[H]ectatis sum

Ad te leuaui
Nisi quia
Qui cõfidunt
In conuertendo.
Beata mr̄ et innupta
uirgo gloriosa regina mū
di intercede pro nobis ad dnm̄
Beata es uirgo ma
ria que dnm̄ porta
sti creatorem mundi genui
sti qui te fecit et in eternū
permanes uirgo Deo grās
Aue maris stella dei mā
alma atq; sēper ūgo
felix celi porta
Sumens illud aue gra

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

briels ore funda nos in pace
mutans nomē eue.
Solue uincla reis pfer lu
men cecis mala nr̄a pelle bo
na cuncta posce.
Monstra te esse matrem
sumat per te precem qui pro
nobis natus tulit esse tuus
Uirgo singularis inter
omnes mitis nos culpis solu
tos mites fac et castos.
Uitā presta puram
iter paratutū ut videntes
ihm̄ semper colletemur.
Sit laus deo patri summo
xpisto decus spiritui sancto

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

trinus honor vnus Amen. ℣
Post partum virgo inuiolata
permansisti. ℟ Dei genitrix inter
cede pro nobis. A. Scā maria.
Magnificat aīa mea. A.
Sancta maria succurre miseris
ne iuua pusillanimes refoue
flebiles ora pro pplō interueni
p clero intercede pro deuoto femi
neo sexu. Dñe exaudi. Et clamor
Concede nos famulos
Conuerte nos
deus salutaris
noster.
Et auerte iram
tuam a nobis.

Deus in adiutorium a
Dñe ad ad Glia viuo audi te
Usquequo dñe obliui-
sceris me ĩ fine usq;
auertis faciē tuam a me
Quādiu ponā in consilia
in aīa mea dolorem in corde
meo per diem.
Usqueq° exaltabitur inimi-
cus meus super me respice
et exaudi me dñe deus meus.
Illuīa oculos meos neūq̄
obdormiam in morte neqn-
do dicat inimicus meus preua-
lui aduersus eum
Qui tribulant me ex

ultabo si motus fuero ego
autem in mīa tua speraui
Exultauit cor meum
in salutari tuo cantabo dño
qui bona tribuit michi et
psallā nōi dñi altissimi.
Iudica me deus et di
scerne causam meā
de gente non sancta ab ho
mine iniquo et doloso erue
me.
Quia tu es deus fortitudo
mea quare me repulisti
et quare tristis incedo dū
affligit me inimicus
Emitte lucem tuam et

ueritatem tuam ipsa me
deduxerunt in monte san
ctu̅ et in tabernacula tua
Et introibo ad altare
dei ad deum qui letificat
iuuentutem meam.
Confitebor tibi in cytha
ra deus deus meus quare
tristis es aīa mea et quare
conturbas me.
Spera in deo qm̄ adhuc
confitebor illi salutare uul
tus mei et deus meus.
Sepe expugnauerunt
me a iuuentute mea
dicat nunc israel.

Sepe expugnauerunt
me a iuuentute mea etenim
non poterant michi
Supra dorsum meum
fabricauerunt peccatores
prolongauerunt iniqui
tatem suam
Dominus iustus concidet
ceruices peccatorum confunda
tur et conuertantur retrorsum
omnes qui oderunt syon.
Fiant sicut fenum tectorum
quod priusquam euellatur exaruit
De quo non impleuit
manum suam qui metet et sinum
suum qui manipulos colliget.

Et nō dixerunt qui pre
teribant bñdictio dñi super
uos benediximus uobis ĩ noīe dñi.
Domine nō est exaltatũ
cor meum neque elati
sunt oculi mei.
Neque ambulaui in ma
gnis neque ĩ mirabilibus sup me
Si nō humiliter sentie
bam sed exaltaui aĩam meã
Sicut ablactatus est sup
matre sua ita retributio
in anima mea.
Speret israel ĩ dño ex hoc
nunc et usque in sclm̃. A
Cum iocunditate memoriã

beate marie celebramur ut ipsa
p nobis intercedat ad dnm ihm xpm

Sicut cynamomum
et balsamu aromati
zans odorem dedi quasi mirra
electa odorem dedisti suauita
tem odoris Deo gratias.
Virgo singularis
Vitam presta
Sit laus deo. ℣ Ecce an
cilla dni ℟ fiat michi scdm
uerbum tuum. Aña Ecce completa
Nunc dimittis. Ant
Ecce completa sunt oia que
dicta sunt per angelum de
uirgine maria Oratio

Gratiam tuam q̃s do
mine mentib; nr̃is
in funde ut qui angelo nu
ciante xp̄i filij tui in car
nationem cognouimus per
passionem eius et crucem
ad resurrectionis gloriam
perducamur p x d n x

Domine ne i furore
tuo arguas me
neqꝫ in ira tua

corripias me

Miserere mei dñe qm in
firmus sum sana me dñe qm
conturbata sunt ossa mea.

Et anima mea turbata est
valde sed tu domine usqꝫquo

Conuertere dñe et eripe
animam meã saluũ me fac ꝑpter
misericordiam tuam

Qm non est in morte q̃
memor sit tui in inferno au
tẽ quis confitebitur tibi.

Laboraui in gemitu
meo lauabo per singulas
noctes lectum meũ lacrimis
meis stratũ meũ rigabo.

BIBLIOTECA NACIONAL DE LISBOA

mo

Turbatus est a furore
oculus meus inveteravi
inter omnes inimicos meos
Discedite a me omnes qui
operamini iniquitatem quoniam ex
audivit dominus vocem fletus mei
Exaudivit dominus depreca
tionem meam dominus orationem
meam suscepit
Erubescant et contur
bentur vehementer omnes
inimici mei convertantur
et erubescant valde velociter
Beati quorum remisse
sunt iniquitates

et quorum tecta sunt peccata
Beatus vir cui non im
putavit dominus peccatum nec est in
spiritu eius dolus
Quoniam tacui inveterave
runt ossa mea dum clama
rem tota die
Quoniam die ac nocte gravata
est super me manus tua
conversus sum in erumpna
mea dum configitur spina
Delictum meum et cognitum
tibi feci et iniusticiam meam
non abscondi
Dixi confitebor adversum
me iniusticiam meam domino

et tu remisisti impietatē
peccati mei
Pro hac orabit ad te oīs
sanctus in tempore oportuno
Verumptamen in dilu
uio aquarū multarū ad eū
non approximabunt
Tu es refugium meū
a tribulacione que circunde
dit me exultacio mea erue
me a circumdantibus me.
Intellectum tibi dabo ⁊
instruam te in uia hac qua
gradieris firmabo super te
oculos meos
Nolite fieri sicut equus

et mulus quib; non est
intellectus

In camo et freno ma
xillas eorum constringe qui
non approximant ad te

Multa flagella peccato
ris sperantem autem in dño
mīa circumdabit

Letamini in dño et
exultate iusti et gloriamini
omnes recti corde

Domine ne in furo
re tuo arguas me
neque in ira tua corripias me

Quoniam sagitte tue infixe
sunt et confirmasti super

me manum tuam
Non est sanitas in car
ne mea a facie ire tue non
est pax ossib; meis a facie
peccatorum meoꝝ
Qm̄ iniquitates mee
super gresse sunt caput
meum et sicut honus gra
ue grauate sunt sup me
Putruerunt et corru
pte sunt cicatrices mee a
facie insipiencie mee.
Miser factus sum et cur
uatus sum usq; in finem
tota die contristatus sum
ingrediebar

Qm̃ lumbi mei impleti
ſunt illuſionibꝫ et non eſt
ſanitas in carne mea.
Afflictus ſum et humilia
tus ſum nimis rugiebam
a gemitu cordis mei.
Dn̄e ante te om̄e deſide
rium meum et gemitus
meus a te nõ eſt abſconditꝰ
Cor meum conturbatum eſt
in me dereliquit me virtus
mea et lumen oculoꝝ meoꝝ
et ipſum non eſt mecum
Amici mei et proximi
mei adverſum me appropin
quaverunt et ſteterunt.

Et qui iuxta me erant
de longe steterunt et vim
faciebant qui querebant
animam meam.

Et qui inquirebant
mala michi locuti sunt va
nitates et dolos tota die me
ditabantur.

Ego autem tanquam surdus
non audiebam et sicut
mutus non aperiens os
suum.

Et factus sum sicut
homo non audiens et non
habens in ore suo redargu
tiones.

Quoniam in te domine ſperaui
tu exaudies me domine deus meus
Quia dixi nequando ſupergau
deant michi inimici mei
et dum commouentur pedes
mei ſuper me magna
locuti ſunt
Quoniam ego in flagella para
tus ſum et dolor meus in
conſpectu tuo ſemper
Quoniam iniquitatem meam
annunciabo et cogitabo pro
peccato meo
Inimici autem mei vi
uunt et confirmati ſunt
ſuper me et multiplicati

ſunt qui oderunt me iniq;
Qui retribuũt mala pro
bonis detrahebant michi qm̃
ſequebant bonitatē
Ne derelinquas me dñe
deus meus ne diſceſſeris a me
Intende in adiutoriũ
meũ dñe deus ſalutis mee
Miſerere mei deus ſe
cundũ magnam
miſericordiam tuam
Et ſecundũ multitu
dinem miſerationũ tuaꝝ
dele iniquitatē meam
Amplius laua me doᵉ
ab iniquitate mea et a pec

cato meo munda me
Qm̄ iniquitatem meã
ego cognosco et peccatũ meũ
contra me et semper
Tibi soli peccavi et ma
lum coram te feci ut iustifi
ceris in sermonibꝫ tuis et vin
cas cum iudicaris
Ecce enim iniquitatibꝫ
conceptus sum et in peccatis
concepit me mater mea
Ecce enĩ ueritate dilexisti
in certa et occulta sapiencie
tue manifestasti michi
Asperges me domine
ysopo et mundabor lava

bis me et super niuem deal
babor.
Auditui meo dabis gau
dium et leticiam et exulta
bunt ossa humiliata.
Auerte faciem tuam
a peccatis meis et omnes ini
quitates meas dele.
Cor mundum crea in me
deus et spiritum rectum inno
ua in visceribus meis.
Ne proiicias me a facie
tua et spiritum sanctum tuum ne
auferas a me.
Redde michi leticiam
salutaris tui et spiritu

principalis confirma me
Docebo iniquos uias
tuas et impii ad te conuer
tantur.
Libera me de sangui
nibus deus deus salutis mee
et exultabit lingua mea
iusticiam tuam.
Dñe labia mea aperies
et os meū annunciabit
laudem tuam.
Qm si voluisses sacri
ficium dedissem utiq; ho
locaustis nō delectaberis
Sacrificium deo sps

contribulatus cor contri
tum est humiliatum deus nō
despicies.
Benigne fac dn̄e in bo
na voluntate tua syon ut
edificentur muri ierlm̄
Tunc acceptabis sacri
ficium dedissem utiqz holo
caustis non delectaberis
Sacrificium deo spūs con
tribulatus cor contrictum
est humiliatum deus non
despicies.
Benigne fac dn̄e in
bona voluntate tua syon ut
edificentur muri ierlm̄

Tunc acceptabis sacri
ficium iusticie oblationes
et holocausta tunc imponent
super altare tuum vitulos.

Domine exaudi oratio
nem meam et clamor
meus ad te veniat.

Non avertas faciem
tuam a me in quacumque
die invocavero te velociter
exaudi me.

Quia defecerunt sicut fumus
dies mei et ossa mea sicut
cremium aruerunt.

Percussus sum ut fenum
et aruit cor meum quia

oblitus sum cōmedere panem
meum
A uoce gemitus mei ad
hesit os meū carni mee
Similis factus sum pel
licano solitudinis factus
sum nicticorax in domicilio
Vigilaui et factus sum
sicut passer solitarius ĩ tecto
Tota die exprobrabant
michi inimici mei et qui
laudabant me aduersum
me iurabant
Qui cinerem tanq̄ panē
manducabam et potum
meū cum fletu miscebam

A facie ire indignatio
nis tue qꝛ eleuans alliſiſti
me
Dies mei ſicut umbra
declinauerunt et ego ſicut
fenum arui
Tu autem dn̄e in eter
num permanes et memo
riale tuū in generatione
et generationem
Tu exurgens domine
miſereberis ſyon quia tp̄s
miſerendi eius qꝛ venit
tempus
Qm̄ placuerunt ſeruis
tuis lapides eius ⁊ terre

eius miserebuntur.

Et timebunt gentes
nomen tuū domine et
omīs reges terre gl'iam tuā

Quia edificavit dn̄s syon
et videbitur in gloria sua

Respexit in orōnem
humilium et non sprevit
precem eorum.

Scribantur hec in gene
ratione altera et populus
qui creabitur laudabit dom̄

Quia pspexit de excelso
sancto suo dn̄s de celo in
terram aspexit.

Ut audiret gemitus

compeditorum ut soluerent
filiorum interemptorum.
Ut annunciarent in syon
nomen domini et laudem eius
in ierusalem.
In conueniendo populos
in unum et reges ut seruiant
domino.
Respondit ei in uia uirtu
tis sue paucitatem dierum
meorum nuncia michi.
Ne reuoces me in dimidio
dierum meorum in generatio
ne et generationem anni tui.
Initio tu domine terram
fundasti et opera manuum

tuarum sunt celi
Ipsi peribunt tu autem
permanes et omnes sicut vesti
mentum veterascent
Et sicut opertorium mu
tabis eos et mutabuntur
tu autem idem ipse es et anni
tui non deficient
Filii servorum tuorum habita
bunt et semen eorum in
seculum dirigetur:
De profundis clamavi
ad te domine domine
exaudi vocem meam
Fiant aures tue inten
dentes in vocem deprecatio

nis mee

Si iniquitates obserua-
ueris domine domine quis su-
stinebit.

Quia apud te propicia-
cio est et propter legem tuam
sustinui te domine.

Sustinuit anima mea
in uerbo eius sperauit anima
mea in domino.

A custodia matutina
usque ad noctem speret israel
in domino.

Quia apud dominum misericordia
et copiosa apud eum redemptio

Et ipse redimet israel ex

oibȝ iniquitatibȝ eius.

Domine exaudi oratio
nem meam auribus
percipe obsecrationem meam
in veritate tua exaudi me
in tua iusticia.

Et non intres in iu
dicium cum servo tuo
quia non iustificabitur
in conspectu tuo omnis vi
vens.

Quia persecutus est ini
micus animam meam humi
liavit in terra vitam meam

Collocavit me in obscu
ris sicut mortuos seculi

et anxiatus est super me sps
meus in me turbatū est cor meū
Memor fui dierum antiquorū
meditatus sum in oībȝ opibȝ
tuis in factis manuum tua
rum meditabar.
Expandi manus meas
ad te aīa mea sicut terra si
ne aqua tibi.
Velociter exaudi me dne
defecit sps meus.
Non auertas faciem tuam
a me et similis ero descenden
tibȝ in lacum.
Auditam fac michi
mane mīam tuā quia in te

speravi.

Notam fac michi viam
in qua ambulem quia ad te le
vavi animam meam.
Eripe me de inimicis meis
domine ad te confugi doce me facere
voluntatem tuam quia deus meus es tu
Spiritus tuus bonus dedu
cet me in terram rectam
propter nomen tuum domine
vivificabis me in equitate tua.
Educes de tribulatione
animam meam et in misericordia tua disp
des omnes inimicos meos
Et perdes omnes qui tribulant animam
meam quoniam ego servus tuus sum.

Ne reminiscaris dñe delicta
nr̃a uel parentũ nostroꝝ
neq; uindictam sumas de
peccatis nostris.

Kyrieleyson.
Xp̃e eleyson.
Xp̃e audi nos
Pater de celis deus
miserere nobis
Fili redemptor mundi de' mi
Sp̃s sc̃e deus miserere n̄
Sc̃a trinitas vn' deus mi
Sc̃a maria ora p nobis.
Sc̃a virgo uirginũ or
Sc̃a dei genitrix or
Sc̃e michael or

Scte raphael or.
Scte gabriel or.
Os sci angli et archangli or.
Sce petre or.
Scte paule or.
Scte andrea or.
Scte bernaba or.
Scte symon or.
Scte iuda or.
Sce luca or.
Os sci apli et euuangeliste or.
Sce stephane or.
Sce leo or.
Sce line or.
Sce clete or.
Sce clemens or.

Scē laurenti or

Scē vincenti or

Oēs scī martires or[ate]

Sancte siluester or

Scē augustine or

Scē romane or

Scē mellone or

Scē nicholae or

Scē ildeuerte or

Scē audoene or

Oēs scī confessores or[ate]

Scā maria magdalene or

Scā anna or

Scā lucia or

Sancta cecilia or

Sancta agnes or

Sancta fides Oꝛ
Sancta spes oꝛ
S sancti virgines oꝛ te
S sci et sancte dei oꝛ te
Propicius esto parce nobis
domine
Ab omni malo libera nos dñe
A dampnatione perpetua l'
A fulgure et tempestate l'
Per misterium sci incarna
tionis tue l'
Per nativitatem tuã l'
Per passionem tuam l'
Per resurrectionem tuã l'
Per gratiam sci sps paracliti l'
Peccatores te rogamus au

di nos

Ut pace nobis dones Te r

Ut mia tua et pietas tua

nos custodiat Te r

Ut fructus terre dare con

servare digneris Te r

Ut nos exaudire digneris Te r

Fili dei Te r m

Agnus dei qui tollis pcta

mundi parce nobis dne

Agn dei q toll peccata mundi

exaudi nos dne Ag. d. q. t. p. m

miserere nobis Kyriel Xpel

Kyriel Pater noster Et ne

Deus cui proprium est misereri

semper et parcere suscipe

deprecationem nostram ut quos
delictorum cathena constringit
miseratio tue pietatis ab
soluat. Per xpm dnm.

Fidelium deus omnium
conditor et redemptor
animabus famulorum famular
umque tuarum remissionem cun
ctorum tribue peccatorum
ut indulgentiam quam semper
optauerunt piis supplicatio
nibus consequantur. Per xpm
dnm.

Bibliotheca Nacional de Lisboa

Domine labia mea
Et os meum
Deus ī adiutor
Dñe ad ad Glia

Patris sapiencia ue
ritas diuina deus
homo captus est hora matu
tina a notis discipulis cito
derelictus a iudeis venditus
traditus et afflictus Adoramus
te xpiste et benediximus tibi
Quia per sanctam crucem tuam
redemisti mundum Omnis terra adoret
te psalmum dicam nomini tuo.

Domine ihesu xpiste fili
dei uiui pone passio
nem crucem et mortem tuam
inter iudicium tuum et animam
meam nunc et in hora mortis
mee et largiri digneris

viuis misericordiam et gratiam defun-
ctis ueniam et requiem eccle-
sie pacem et concordiam et no-
bis peccatoribus vitam et glo-
riam sempiternam. Per xpm dnm.

Deus in adiutorium.

Hora prima ductus
est ihs ad pylatum
falsis testimoniis multum
accusatum in collo percu-
tiunt manibus ligatum
vultum dei conspuunt
lumen celi gratum. Adoramus.

Domine ihu xpiste.

Deus in adiutorium.

Crucifige clamitant

hora tertiarum illusus in
duitur ueste purpurearum
caput eius pungitur coro
na spinarum crucem portans
humeris ad locum penarum.
Adoramus te domine ihesu.
Deus in adiutorium
Hora sexta ihesus est cru
ci conclauatus et
cum latronibus pendens depu
tatus pre tormentis sici
ens felle saturatus. Agnus
crimen diluit sic ludifi
catus. Adoramus te domine.
Deus in adiutor
Hora nona dominus ihesus ex

spiravit hely clamans animam
patri commendavit latus eius
lancea miles perforavit terra
tunc tremuit et sol obscuratur.
Adoramus te Domine ihesu
Deus in adiutorium
De cruce deponitur hora
vespertina fortitudo
latuit in mente divina ta-
lem mortem subiit vite medi-
cina heu corona glorie ia-
cuit spina. Adoramus Domine i.
Converte nos deus.
Hora completorii datur
sepulture corpus christi
nobile spes vite future con

ditur aromate complentur
scripture iugis sit memoria
mors sit michi cure.
Has horas canonicas cum
deuotione xpiste tibi recollo
pia ratione ut qui pro me
passus est amoris ardore sis
michi solatium in mortis
agone Amen De s esperit
Domine labia
mea aperies.
Et os meum
Deus in adiuto
Dne ad ad Gloria
Nobis sancti spiritus
gratia sit data de qua

virgo virginum fuit obum-
brata cum per sanctum an-
gelum fuit salutata ver-
bum caro factum est virgo
fecundata. R. Veni sancte spiritus
reple tuorum corda fidelium et
tui amoris in eis ignem accen-
de. V. Emitte spiritum tuum et creabun-
tur. R. Et renovabis faciem terre
Omnipotens sempiterne deus
da nobis illam sanctam
spiritus graciam quam discipulis
in die sancto penthecostes
transfudisti. Per christum d.
Deus in adiutorium
De virgine filius christus

fuit natus cruciatus mor
tuus atque tumulatus re
surgens discipulis fuit de
monstratus et ipsis cernen
tibus celis elevatus. Ven sce
O ps sempiterne.
Deus in adiutorium.
Spiritum scm spm deus
delegavit in die sco
pentecostes ipsos conforta
vit et de linguis igneis illos
inflammavit septiformi
gra karisma vocatus.
Ven sce O ps sempiterne
Deus in adiutorium
Septiformem

tunc acceptauerunt quare
ydiomata cuncta cognouerant
ad diuersa climata mundi
recesserunt et fidem catholi
cam tunc predicauerunt
Veni sce [O]ps sempiterne
[D]eus in adiutorium
[S]ps paraclitus fuit
appellatus donum dei
caritas fons uiuificatus spi
ritalis unctio ignis inflamat
septiformis gra carissima
vocatus Veni sce [O]ps.
[D]eus in adiutorium
[D]extre dei digitus uirtus
spiritalis nos defendat

eruat ab oib; malis ut
nobis non noceat demon
infernalis sed protegat
et foueat et nutriat sub
alis xcim sec O ps sem.
Conuertit nos deus
Spiritus paraclitus
nos uelit iuuare
gressus nostros regere et il
luminare ut cum iudex uene
ris omnis iudicare nos uelit
suam dexteram appellare
Has horas canonicas
cum deuotione tibi sancte spiritus
pia ratione dicam ut nos ui
sites inspiratione et uera

tinas iugiter celi regione a-
xeni scē

O ps̄ sempiterne

Biblioteca Nacional de Lisboa

INRI